



بَيْنَ مَجْمَعٍ

بِالْقُرْآنِ حَيَاةٌ

لِحِفْظِ الْقُرْآنِ الْكَرِيمِ

٦ أشهر

ثلاثة أوجه ورع يوميًا

إعداد

فريق علمي مختص

الإصدار الثالث

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ





لا تستبطئ الطريق ما دمت تسير..
ولا تستطيله ما دمت تمضي..
فمن سار على الدرب وصل!
وأن تصل بعد زمن بإتقان..
خير لك من أن تصل بسرعة دون إتقان!
فالعبرة بالنتائج لا بسرعة الوصول!



رُؤْيَا

أن يتمكن الجميع من حفظ كلام الله تعالى
وفق آلية معينة ميسرة تحقق أفضل النتائج
ودون حاجة للالتزام بمعلم أو مدرسة ..



المحتوى

- طريقة الحفظ المثالية ٦
- خطة الحفظ ٨
- الشهر الأول ٩
- الشهر الثاني ١٠
- الشهر الثالث ١١
- الشهر الرابع ١٢
- الشهر الخامس ١٣
- الشهر السادس ١٤
- دعاء ١٥
- مختصر أحكام التجويد ١٦



طريقتي الحفظ للمثابرة

في سبع خطوات

١

الاستماع



لتقرأ الآيات قراءة صحيحة؛ استمع أولاً للمقرر المراد حفظه مرة أو مرتين من قارئ متقن، حتى تجيد التلاوة وتحسّن الأداء.

٢

الفهم والتدبر



حتى تعمل بالقرآن وتعيش مع الآيات، اقرأ أحد التفاسير بتمعن كتفسير الإمام السعدي، واكتب فائدة واحدة -على الأقل- من كل مقرر تحفظه.

٣

التكرار



التكرار سر الحفظ المتقن فكلما كررت أكثر رسخ حفظك أكثر! فبعد أن تستمع للمقرر الجديد وتقرأ تفسيره؛ كرره تلاوةً: تكرر كل آية حتى تحفظها ثم الآية التي بعدها ثم تكرر المقرر كاملاً خمسة عشر مرة، فتحفظه بإتقان، وتحوز أجور التكرار العظيمة!

٤

التثبيت



بعد تكرارك للمقرر كاملاً تقوم بتثبيته وذلك بتسميعه لنفسك مرتين أو ثلاث غيباً، فإن كان لديك خطأ أو تردد تعيد التكرار حتى تتقن حفظك بطلاقة.

0

الربط



وينقسم إلى قسمين:
١. الربط الجزئي: وهو ..
٢. الربط الكلي: وهو ..

٦

المراجعة



وهي مقرر موضح بخطط تحفيظ برنامج
بالقرآن نحيا Quranlives.com يتم
تخصيص إنجازة في الصلوات سواء
الفرائض أو النوافل.

٧

العرض



وهي أن تقوم بتسميع مقررک الجديد
للمعلم إن تيسر أو لأي أحد حولك إذا لم
يتوفر لديك معلم.

* الربط الجزئي: أن تربط بين أول آية في السورة ومع المقرر اليومي الجديد بأن تعرض السورة من بدايتها إلى أن تصل لربطها بالحفظ الجديد .
* الربط الكلي: وهو أن تخصص يوماً في الأسبوع يسمى بيوم الهمة تتوقف فيه عن الحفظ الجديد وتقوم بمراجعة كل ما حفظته من بداية المصحف إلى آخر آية وصلت لها .

خطبتي الحفظ

ثلاثة أوجه وربع يوميًا، خلال ستة أشهر



الشهر الأول

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|----------|---------|-------|----------|-----------|----------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | كاملة | | الفاتحة | | القارعة | الناس | | ١ |
| | | العصر | الناس | | | التين | العاديات | | ٢ |
| | | التين | التكاثر | | | البلد | الشرح | | ٣ |
| | | البلد | الشرح | | | الطارق | الفجر | | ٤ |
| | | الطارق | الفجر | | | المطففين | البروج | | ٥ |
| | | المطففين | البروج | | | عبس | الانفطار | | ٦ |
| | | عبس | الانفطار | | | النبأ | النازعات | | ٧ |
| | | النبأ | النازعات | | | الإنسان | المرسلات | | ٨ |
| | | التين | الناس | | | المدثر | القيامة | | ٩ |
| | | الطارق | الشرح | | | الجن | المزمل | | ١٠ |
| | | عبس | البروج | | | المعارج | نوح | | ١١ |
| | | الإنسان | النازعات | | | القلم | الحاقة | | ١٢ |
| | | الجن | القيامة | | | التحريم | الملك | | ١٣ |
| | | القلم | نوح | | | التغابن | الطلاق | | ١٤ |
| | | التغابن | الملك | | | الجمعة | المنافقون | | ١٥ |
| | | الغاشية | الناس | | | المتحنة | الصف | | ١٦ |
| | | النبأ | الأعلى | | | آخرها | ١ | الشعر | ١٧ |
| | | نوح | المرسلات | | | آخرها | ١ | المجادلة | ١٨ |
| | | الملك | المعارج | | | آخرها | ١ | الحديد | ١٩ |
| | | الجمعة | التحريم | | | آخرها | ١ | الواقعة | ٢٠ |
| | | المجادلة | الصف | | | آخرها | ١ | الرحمن | ٢١ |
| | | الرحمن | الحديد | | | آخرها | ١ | القمر | ٢٢ |
| | | الغاشية | الناس | | | آخرها | ١ | النجم | ٢٣ |
| | | النبأ | الأعلى | | | آخرها | ١ | الطور | ٢٤ |
| | | نوح | المرسلات | | | آخرها | ١ | الذاريات | ٢٥ |
| | | الملك | المعارج | | | آخرها | ١ | ق | ٢٦ |
| | | الجمعة | التحريم | | | آخرها | ١ | الحجرات | ٢٧ |
| | | المجادلة | الصف | | | آخرها | ١ | الفتح | ٢٨ |
| | | الرحمن | الحديد | | | آخرها | ١ | محمد | ٢٩ |
| | | الذاريات | القمر | | | آخرها | ١ | الأحقاف | ٣٠ |

الشهر الثاني

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|----------|--------|-------|-------|----|---------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | الفتح | ق | | | آخرها | ١ | الجاثية | ١ |
| | | الأحقاف | محمد | | | آخرها | ١ | الدخان | ٢ |
| | | الدخان | الجاثية | | | ٣٥ | ١ | الزخرف | ٣ |
| | | الغاشية | الناس | | ٣٥-١ | آخرها | ٣٦ | الزخرف | ٤ |
| | | النبأ | الأعلى | | | ٢٣ | ١ | الشورى | ٥ |
| | | نوح | المرسلات | | ٢٣-١ | آخرها | ٢٤ | الشورى | ٦ |
| | | الملك | المعارج | | | ٢٩ | ١ | فصلت | ٧ |
| | | الجمعة | التحریم | | ٢٩-١ | آخرها | ٣٠ | فصلت | ٨ |
| | | المجادلة | الصف | | | ٢٢ | ١ | غافر | ٩ |
| | | الرحمن | الحديد | | ٢٢-١ | ٥٢ | ٢٣ | غافر | ١٠ |
| | | الذاريات | القمر | | ٥٢-١ | آخرها | ٥٣ | غافر | ١١ |
| | | الفتح | ق | | | ٢١ | ١ | الزمر | ١٢ |
| | | الأحقاف | محمد | | ٢١-١ | ٤٨ | ٢٢ | الزمر | ١٣ |
| | | الدخان | الجاثية | | ٤٨-١ | آخرها | ٤٩ | الزمر | ١٤ |
| | | الشورى | الزخرف | | | ٤٠ | ١ | ص | ١٥ |
| | | آخرها | ١ | فصلت | ٤٠-١ | آخرها | ٤١ | ص | ١٦ |
| | | آخرها | ١ | غافر | | ٧٤ | ١ | الصفات | ١٧ |
| | | آخرها | ١ | الزمر | ٧٤-١ | آخرها | ٧٥ | الصفات | ١٨ |
| | | آخرها | ١ | ص | | ٤٤ | ١ | يس | ١٩ |
| | | الغاشية | الناس | | ٤٤-١ | آخرها | ٤٥ | يس | ٢٠ |
| | | النبأ | الأعلى | | | ٢٨ | ١ | فاطر | ٢١ |
| | | نوح | المرسلات | | ٢٨-١ | آخرها | ٢٩ | فاطر | ٢٢ |
| | | الملك | المعارج | | | ٢٣ | ١ | سبأ | ٢٣ |
| | | الجمعة | التحریم | | ٢٣-١ | آخرها | ٢٤ | سبأ | ٢٤ |
| | | المجادلة | الصف | | | ٢٤ | ١ | الأحزاب | ٢٥ |
| | | الرحمن | الحديد | | ٢٤-١ | ٤٨ | ٢٥ | الأحزاب | ٢٦ |
| | | الذاريات | القمر | | ٤٨-١ | آخرها | ٤٩ | الأحزاب | ٢٧ |
| | | الفتح | ق | | | آخرها | ١ | السجدة | ٢٨ |
| | | الأحقاف | محمد | | | آخرها | ١ | لقمان | ٢٩ |
| | | الزخرف | الجاثية | | | ٣٢ | ١ | الروم | ٣٠ |

الشهر الثالث

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|----------|----------|---------|-------|-----|----------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | فصلت | الشورى | | ٣٢ - ١ | آخرها | ٣٣ | الروم | ١ |
| | | آخرها | ١ | غافر | | ٢٧ | ١ | العنكبوت | ٢ |
| | | آخرها | ١ | الزمر | ٢٧ - ١ | ٤٥ | ٢٨ | العنكبوت | ٣ |
| | | الصفحات | ص | | ٤٥ - ١ | آخرها | ٤٦ | العنكبوت | ٤ |
| | | فاطر | يس | | | ٢٨ | ١ | القصص | ٥ |
| | | آخرها | ١ | سبأ | ٢٨ - ١ | ٥٦ | ٢٩ | القصص | ٦ |
| | | آخرها | ١ | الأحزاب | ٥٦ - ١ | آخرها | ٥٧ | القصص | ٧ |
| | | لقمان | السجدة | | | ٤٤ | ١ | النمل | ٨ |
| | | آخرها | ١ | الروم | ٤٤ - ١ | آخرها | ٤٥ | النمل | ٩ |
| | | آخرها | ١ | العنكبوت | | ٦٨ | ١ | الشعراء | ١٠ |
| | | آخرها | ١ | القصص | ٦٨ - ١ | ١٤٠ | ٦٩ | الشعراء | ١١ |
| | | الغاشية | الناس | | ١٤٠ - ١ | آخرها | ١٤١ | الشعراء | ١٢ |
| | | النبأ | الأعلى | | | ٣٤ | ١ | الفرقان | ١٣ |
| | | نوح | المرسلات | | ٣٤ - ١ | آخرها | ٣٥ | الفرقان | ١٤ |
| | | الملك | المعارج | | | ٢٩ | ١ | النور | ١٥ |
| | | الجمعة | التحريم | | ٢٩ - ١ | ٤٥ | ٣٠ | النور | ١٦ |
| | | المجادلة | الصف | | ٤٥ - ١ | آخرها | ٤٦ | النور | ١٧ |
| | | الرحمن | الحديد | | | ٦١ | ١ | المؤمنون | ١٨ |
| | | الذاريات | القمر | | ٦١ - ١ | آخرها | ٦٢ | المؤمنون | ١٩ |
| | | الفتح | ق | | | ٢٤ | ١ | الحج | ٢٠ |
| | | الأحقاف | محمد | | ٢٤ - ١ | ٤٦ | ٢٥ | الحج | ٢١ |
| | | الزخرف | الجاثية | | ٤٦ - ١ | آخرها | ٤٧ | الحج | ٢٢ |
| | | فصلت | الشورى | | | ٣٥ | ١ | الأنبياء | ٢٣ |
| | | آخرها | ١ | غافر | ٣٥ - ١ | ٧٣ | ٣٦ | الأنبياء | ٢٤ |
| | | آخرها | ١ | الزمر | ٧٣ - ١ | آخرها | ٧٤ | الأنبياء | ٢٥ |
| | | الصفحات | ص | | | ٥٥ | ١ | طه | ٢٦ |
| | | فاطر | يس | | ٥٥ - ١ | ٩٨ | ٥٦ | طه | ٢٧ |
| | | آخرها | ١ | سبأ | ٩٨ - ١ | آخرها | ٩٩ | طه | ٢٨ |
| | | آخرها | ١ | الأحزاب | | ٤٠ | ١ | مريم | ٢٩ |
| | | لقمان | السجدة | | ٤٠ - ١ | آخرها | ٤١ | مريم | ٣٠ |

الشهر الرابع

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|----------|----------|---------|-------|-----|---------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | آخرها | ١ | الروم | | ٤٤ | ١ | الكهف | ١ |
| | | آخرها | ١ | العنكبوت | ٤٤ - ١ | ٨٢ | ٤٥ | الكهف | ٢ |
| | | آخرها | ١ | القصص | ٨٢ - ١ | آخرها | ٨٣ | الكهف | ٣ |
| | | آخرها | ١ | النمل | | ٢٨ | ١ | الإسراء | ٤ |
| | | آخرها | ١ | الشعراء | ٢٨ - ١ | ٥٨ | ٢٩ | الإسراء | ٥ |
| | | آخرها | ١ | الفرقان | ٥٨ - ١ | ٨٧ | ٥٩ | الإسراء | ٦ |
| | | آخرها | ١ | النور | ٨٧ - ١ | آخرها | ٨٨ | الإسراء | ٧ |
| | | آخرها | ١ | المؤمنون | | ٣٤ | ١ | النحل | ٨ |
| | | آخرها | ١ | الحج | ٣٤ - ١ | ٦٤ | ٣٥ | النحل | ٩ |
| | | آخرها | ١ | الأنبياء | ٦٤ - ١ | ٨٩ | ٦٥ | النحل | ١٠ |
| | | آخرها | ١ | طه | ٨٩ - ١ | ١١١ | ٩٠ | النحل | ١١ |
| | | آخرها | ١ | مريم | ١١١ - ١ | آخرها | ١١٢ | النحل | ١٢ |
| | | آخرها | ١ | الكهف | | ٥٠ | ١ | الحجر | ١٣ |
| | | آخرها | ١ | الإسراء | ٥٠ - ١ | آخرها | ٥١ | الحجر | ١٤ |
| | | آخرها | ١ | النحل | | ١٨ | ١ | إبراهيم | ١٥ |
| | | الغاشية | الناس | | ١٨ - ١ | آخرها | ١٩ | إبراهيم | ١٦ |
| | | النبأ | الأعلى | | | ١٨ | ١ | الرعد | ١٧ |
| | | نوح | المرسلات | | ١٨ - ١ | آخرها | ١٩ | الرعد | ١٨ |
| | | الملك | المعارج | | | ٢٩ | ١ | يوسف | ١٩ |
| | | الجمعة | التحريم | | ٢٩ - ١ | ٥٧ | ٣٠ | يوسف | ٢٠ |
| | | المجادلة | الصف | | ٥٧ - ١ | ٨٧ | ٥٨ | يوسف | ٢١ |
| | | الرحمن | الحديد | | ٨٧ - ١ | آخرها | ٨٨ | يوسف | ٢٢ |
| | | الذاريات | القمر | | | ٢٤ | ١ | هود | ٢٣ |
| | | الفتح | ق | | ٢٤ - ١ | ٤٩ | ٢٥ | هود | ٢٤ |
| | | الأحقاف | محمد | | ٤٩ - ١ | ٨٣ | ٥٠ | هود | ٢٥ |
| | | الدخان | الجاثية | | ٨٣ - ١ | آخرها | ٨٤ | هود | ٢٦ |
| | | الشورى | الزخرف | | | ٢٠ | ١ | يونس | ٢٧ |
| | | آخرها | ١ | فصلت | ٢٠ - ١ | ٤٤ | ٢١ | يونس | ٢٨ |
| | | آخرها | ١ | غافر | ٤٤ - ١ | ٧٠ | ٤٥ | يونس | ٢٩ |
| | | آخرها | ١ | الزمر | ٧٠ - ١ | آخرها | ٧١ | يونس | ٣٠ |

الشهر الخامس

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|--------|----------|---------|-------|-----|---------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | الصفحات | ص | | | ٢٢ | ١ | التوبة | ١ |
| | | فاطر | يس | | ٢٢ - ١ | ٣٧ | ٢٣ | التوبة | ٢ |
| | | آخرها | ١ | سبأ | ٣٧ - ١ | ٥٥ | ٣٨ | التوبة | ٣ |
| | | آخرها | ١ | الأحزاب | ٥٥ - ١ | ٧٢ | ٥٦ | التوبة | ٤ |
| | | لقمان | السجدة | | ٧٢ - ١ | ٩٣ | ٧٣ | التوبة | ٥ |
| | | آخرها | ١ | الروم | ٩٣ - ١ | ١١٢ | ٩٤ | التوبة | ٦ |
| | | آخرها | ١ | العنكبوت | ١١٢ - ١ | آخرها | ١١٣ | التوبة | ٧ |
| | | آخرها | ١ | القصص | | ٢٩ | ١ | الأنفال | ٨ |
| | | آخرها | ١ | النمل | ٢٩ - ١ | ٤٩ | ٣٠ | الأنفال | ٩ |
| | | آخرها | ١ | الشعراء | ٤٩ - ١ | آخرها | ٥٠ | الأنفال | ١٠ |
| | | آخرها | ١ | الفرقان | | ٣٠ | ١ | الأعراف | ١١ |
| | | آخرها | ١ | النور | ٣٠ - ١ | ٥٣ | ٣١ | الأعراف | ١٢ |
| | | آخرها | ١ | المؤمنون | ٥٣ - ١ | ٧٩ | ٥٤ | الأعراف | ١٣ |
| | | آخرها | ١ | الحج | ٧٩ - ١ | ١٠٢ | ٨٠ | الأعراف | ١٤ |
| | | آخرها | ١ | الأنبياء | ١٠٢ - ١ | ١٣٦ | ١٠٣ | الأعراف | ١٥ |
| | | آخرها | ١ | طه | ١٣٦ - ١ | ١٥٨ | ١٣٧ | الأعراف | ١٦ |
| | | آخرها | ١ | مريم | ١٥٨ - ١ | ١٧٨ | ١٥٩ | الأعراف | ١٧ |
| | | آخرها | ١ | الكهف | ١٧٨ - ١ | آخرها | ١٧٩ | الأعراف | ١٨ |
| | | آخرها | ١ | الإسراء | | ٣٢ | ١ | الأنعام | ١٩ |
| | | آخرها | ١ | النحل | ٣٢ - ١ | ٥٨ | ٣٣ | الأنعام | ٢٠ |
| | | آخرها | ١ | الحجر | ٥٨ - ١ | ٧٣ | ٥٩ | الأنعام | ٢١ |
| | | آخرها | ١ | إبراهيم | ٧٣ - ١ | ٩٤ | ٧٤ | الأنعام | ٢٢ |
| | | آخرها | ١ | الرعد | ٩٤ - ١ | ١١٧ | ٩٥ | الأنعام | ٢٣ |
| | | آخرها | ١ | يوسف | ١١٧ - ١ | ١٣٧ | ١١٨ | الأنعام | ٢٤ |
| | | ٤٩ | ١ | هود | ١٣٧ - ١ | ١٥٠ | ١٣٨ | الأنعام | ٢٥ |
| | | آخرها | ٥٠ | هود | ١٥٠ - ١ | آخرها | ١٥١ | الأنعام | ٢٦ |
| | | ٤٤ | ١ | يونس | | ١٤ | ١ | المائدة | ٢٧ |
| | | آخرها | ٤٥ | يونس | ١٤ - ١ | ٣٤ | ١٥ | المائدة | ٢٨ |
| | | ٧٢ | ١ | التوبة | ٣٤ - ١ | ٥٠ | ٣٥ | المائدة | ٢٩ |
| | | آخرها | ٧٣ | التوبة | ٥٠ - ١ | ٧٦ | ٥١ | المائدة | ٣٠ |

الشهر السادس

| ملاحظات | الإتمام | المراجعة | | | الربط | الحفظ | | | م |
|---------|---------|----------|----------|----------|-------|-------|-----|----------|----|
| | | إلى | من | السورة | | إلى | من | السورة | |
| | | آخرها | ١ | الأطفال | ٧٦-١ | ٩٦ | ٧٧ | المائدة | ١ |
| | | ٧٩ | ١ | الأعراف | ٩٦-١ | آخرها | ٩٧ | المائدة | ٢ |
| | | ١٤٩ | ٨٠ | الأعراف | | ١٦ | ١ | النساء | ٣ |
| | | آخرها | ١٥٠ | الأعراف | ١٦-١ | ٣٠ | ١٧ | النساء | ٤ |
| | | ٩٤ | ١ | الأنعام | ٣٠-١ | ٤٨ | ٣١ | النساء | ٥ |
| | | آخرها | ٩٥ | الأنعام | ٤٨-١ | ٧٣ | ٤٩ | النساء | ٦ |
| | | ٦٦ | ١ | المائدة | ٧٣-١ | ٩٣ | ٧٤ | النساء | ٧ |
| | | آخرها | ٦٧ | المائدة | ٩٣-١ | ١١٣ | ٩٤ | النساء | ٨ |
| | | الغاشية | الناس | | ١١٣-١ | ١٣٤ | ١١٤ | النساء | ٩ |
| | | النبأ | الأعلى | | ١٣٤-١ | ١٥٢ | ١٣٥ | النساء | ١٠ |
| | | نوح | المرسلات | | ١٥٢-١ | آخرها | ١٥٣ | النساء | ١١ |
| | | الملك | المعارج | | | ٣٠ | ١ | آل عمران | ١٢ |
| | | الجمعة | التحریم | | ٣٠-١ | ٦٣ | ٣١ | آل عمران | ١٣ |
| | | المجادلة | الصف | | ٦٣-١ | ٩٢ | ٦٤ | آل عمران | ١٤ |
| | | الرحمن | الحديد | | ٩٢-١ | ١٢٠ | ٩٣ | آل عمران | ١٥ |
| | | الذاريات | القمر | | ١٢٠-١ | ١٥٥ | ١٢١ | آل عمران | ١٦ |
| | | الفتح | ق | | ١٥٥-١ | ١٨٠ | ١٥٦ | آل عمران | ١٧ |
| | | الأحقاف | محمد | | ١٨٠-١ | آخرها | ١٨١ | آل عمران | ١٨ |
| | | الدخان | الجبائية | | | ٣٩ | ١ | البقرة | ١٩ |
| | | الشورى | الزخرف | | ٣٩-١ | ٧١ | ٤٠ | البقرة | ٢٠ |
| | | آخرها | ١ | فصلت | ٧١-١ | ٩٦ | ٧٢ | البقرة | ٢١ |
| | | آخرها | ١ | غافر | ٩٦-١ | ١٢٣ | ٩٧ | البقرة | ٢٢ |
| | | آخرها | ١ | الزمر | ١٢٣-١ | ١٥٢ | ١٢٤ | البقرة | ٢٣ |
| | | الصفات | ص | | ١٥٢-١ | ١٨٢ | ١٥٣ | البقرة | ٢٤ |
| | | فاطر | يس | | ١٨٢-١ | ٢٠٣ | ١٨٣ | البقرة | ٢٥ |
| | | آخرها | ١ | سبأ | ٢٠٣-١ | ٢٢٧ | ٢٠٤ | البقرة | ٢٦ |
| | | آخرها | ١ | الأحزاب | ٢٢٧-١ | ٢٤٥ | ٢٢٨ | البقرة | ٢٧ |
| | | لقمان | السجدة | | ٢٤٥-١ | ٢٥٩ | ٢٤٦ | البقرة | ٢٨ |
| | | آخرها | ١ | الروم | ٢٥٩-١ | ٢٧٤ | ٢٦٠ | البقرة | ٢٩ |
| | | آخرها | ١ | العنكبوت | ٢٧٤-١ | آخرها | ٢٧٥ | البقرة | ٣٠ |

اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي بِالْقُرْآنِ وَاجْعَلْهُ لِي إِمَامًا وَنُورًا وَهُدًى وَرَحْمَةً وَشِفَاءً وَوَفْقًا لِلِاعْتِمَادِ
بِهِ وَيَسِّرْ لِي تِلَاوَتَهُ آتَاءَ اللَّيْلِ وَأَطْرَافِ النَّهَارِ. اللَّهُمَّ ذَكِّرْنِي مِنْهُ مَا نَسِيتُ وَعَلِّمْنِي مِنْهُ
مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِي ضَبْطَهُ وَإِتْقَانَهُ، وَالْعَمَلَ بِهِ، وَاجْعَلْهُ لِي حُجَّةً يَارَبَّ الْعَالَمِينَ.

اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي الَّذِي هُوَ عَصَمَةٌ لِي مِنْ أَمْرِي، وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي، وَأَصْلِحْ
لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي، وَاجْعَلْ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ وَاجْعَلْ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي
مِنْ كُلِّ شَرٍّ. اللَّهُمَّ اجْعَلْ خَيْرَ عُمْرِي آخِرَهُ وَخَيْرَ عَمَلِي خَوَاتِمَهُ وَخَيْرَ أَيَّامِي يَوْمَ الْقَائِلِ
فِيهِ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عَيْشَةً هَيِّئَةً وَمِيتَةً سَوِيَّةً وَمَرَدًّا غَيْرَ مُخْزٍ وَلَا فَاضِحٍ.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَسْأَلَةِ وَخَيْرَ الدُّعَاءِ وَخَيْرَ النَّجَاحِ وَخَيْرَ الْعِلْمِ وَخَيْرَ الْعَمَلِ وَخَيْرِ
الثَّوَابِ وَخَيْرِ الْحَيَاةِ وَخَيْرِ الْمَمَاتِ وَثَبِّتْنِي وَثَقِّلْ مَوَازِينِي وَحَقِّقْ إِيْمَانِي وَارْفَعْ دَرَجَتِي
وَتَقَبَّلْ صَلَاتِي وَاعْفِرْ خَطِيئَاتِي وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَا مِنَ الْجَنَّةِ.

اللَّهُمَّ فَرِّجْ عَنِ الْمُسْلِمِينَ الْمُسْتَضْعَفِينَ فَوْقَ كُلِّ أَرْضٍ وَتَحْتَ كُلِّ سَمَاءٍ، اللَّهُمَّ وَحْدَ صَفْهِمِ
وَأَصْلِحْ أحوالهم، اللَّهُمَّ أَصْلِحْ مِنْ وِليتهِ أَمْرَ الْمُسْلِمِينَ وَخِذْ بِنَوَاصِيهِمْ لِلْبِرِّ وَالتَّقْوَى
وَارْزُقْهُمْ مِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى، اللَّهُمَّ أَعِزَّنَا مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ.

اللَّهُمَّ رَدِّنا إِلَيْكَ وَإِلَى كِتَابِكَ الْعَزِيزِ رَدًّا جَمِيعًا، وَوَفِّقْنَا لِأَنْ نَتَضَرَّعَ إِلَيْكَ وَنَعْتَصِمَ بِكَ
وَنَتَوَكَّلَ عَلَيْكَ حَقَّ التَّوَكُّلِ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ..

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمِ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ
كُلِّ بَرٍّ وَالفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ.

اللَّهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْأُمُورِ كُلِّهَا، وَأَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْآخِرَةِ. اللَّهُمَّ
اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بِهِ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعْصِيَتِكَ وَمَنْ طَاعَتِكَ مَا تَبْلُغُنَا بِهَا جَنَّتِكَ
وَمَنْ الْيَقِينَ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مَصَائِبَ الدُّنْيَا وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا
أَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا وَانصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا وَلَا
تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تَسْلُطْ عَلَيْنَا مَنْ لَا
يَرْحَمُنَا. اللَّهُمَّ لَا تَدْعُ لَنَا ذَنْبًا إِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلَا دَيْنًا إِلَّا قَضَيْتَهُ وَلَا حَاجَةً
مِنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ. رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ الْأَخْيَارِ وَسَلَّمْ تَسْلِيمًا كَثِيرًا.



محصن حكم التمجيد للقرآن الكريم



امسح الرمز



مَا سَأَلَكَ اللَّهُ فِي حَوَالِي مَا بَدَأَ



بِالْقُرْآنِ نَحْيَانَا

WWW.QURANLIVES.COM

